पाठ - मैं और मेरा देश ('कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर')

खंड 1: वैयक्तिक पूर्णता का भ्रम और मानसिक भूकंप (लाला लाजपत राय का संस्मरण)

कठिन शब्दार्थ

- **संपर्क:** मेल-जोल, संबंध
- **संचित:** इकट्ठा किया हुआ, संचित ज्ञान-भंडार
- **हीन:** छोटा, नीचा या दीन
- **मानस:** मन, चित्त या अंतःकरण
- **तेजस्वी:** प्रतापी, प्रभावशाली या ओजस्वी
- **बवंडर:** भयंकर आंधी-तूफान, उथल-पुथल
- **कसक:** दर्द, टीस या मानसिक पीड़ा

सरल व्याख्या

लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जी अपने जीवन के आरंभिक दौर का विश्लेषण करते हुए कहते हैं कि वे अपने घर, पड़ोस और नगर के विशाल सामाजिक परिवेश में पलकर बड़े हुए। उन्हें समाज से आदर मिला, ज्ञान-भंडार मिला और वे खुद को एक 'पूर्ण मनुष्य' समझने लगे थे। उन्हें भ्रम था कि उनकी मनुष्यता में अब कोई कमी नहीं है। परंतु एक दिन उनके विचारों की इस सुंदर दीवार में एक गहरा मानसिक भूकंप आया, जिसने उनकी इस झूठी पूर्णता को हिलाकर रख दिया।

यह वैचारिक भूकंप किसी प्राकृतिक आपदा से नहीं, बल्कि स्वाधीनता सेनानी 'पंजाब केसरी' लाला लाजपत राय जी के एक गहरे प्रामाणिक अनुभव से आया था। लालाजी पराधीन भारत के घने अंधकार में अपने रक्त से देश के गौरव का दीपक जलाने वाले प्रतापी पुरुष थे। उन्होंने वैश्विक भ्रमण के बाद अपना निचोड़ प्रस्तुत करते हुए कहा था— *"मैं अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस आदि देशों में घूमा, पर जहाँ भी मैं गया, भारत की गुलामी का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।"* लालाजी के इस वाक्य ने लेखक को झकझोर दिया। लेखक को अहसास हुआ कि यदि किसी व्यक्ति के पास संसार और स्वर्ग के भी समस्त ऐश्वर्य मौजूद हों, परंतु यदि उसका राष्ट्र पराधीन या हीन है, तो वह व्यक्तिगत रूप से कभी वास्तविक सम्मान नहीं पा सकता। नागरिक का गौरव उसके देश के गौरव से अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है।

खंड 2: जापान के दो युवकों की घटनाएँ (नागरिक आचरण का राष्ट्र पर प्रभाव)

कठिन शब्दार्थ

- **दाद देना:** न्यायोचित प्रशंसा करना, गुण की कद्र करना
- **शत-प्रतिशत (सौ फीसदी):** पूरी तरह से, बिल्कुल सच
- **दुर्लभ:** जो बहुत कठिनाई से मिले, मूल्यवान
- **बरामद:** खोजकर निकाला गया, वापस पाया हुआ
- **लांछित:** कलंकित या दोषयुक्त

सरल व्याख्या

लेखक समाजशास्त्रियों के इस कुतर्क का खंडन करते हैं कि एक साधारण या गरीब नागरिक भला अपने देश के गौरव के लिए क्या कर सकता है। वे स्पष्ट करते हैं कि जीवन एक विशाल युद्ध या समुद्र के समान है, जहाँ सैनिकों को रसद (अनाज) पहुँचाने वाले किसान और केवल मैच में खिलाड़ियों के लिए तालियाँ बजाकर उत्साह (बिजली) भरने वाले दर्शकों का भी उतना ही महत्व है। "अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता" यह कहावत पूरी तरह झूठी है। इसे सिद्ध करने के लिए वे जापान की दो वास्तविक घटनाएँ प्रस्तुत करते हैं:

पहली घटना (गौरव बढ़ाना): हमारे देश के महान संत स्वामी रामतीर्थ जब जापान की रेल में यात्रा कर रहे थे, तो उन्हें खाने को अच्छे फल नहीं मिले। उनके मुख से अनायास निकला कि शायद जापान में अच्छे फल नहीं मिलते। प्लेटफार्म पर खड़े एक साधारण जापानी युवक ने यह सुन लिया। वह अपनी ट्रेन छोड़कर भागा और कहीं दूर से ताज़े फलों की टोकरी लाकर स्वामी जी को सस्नेह भेंट कर दी। जब स्वामी जी ने मूल्य देना चाहा, तो उसने पैसे लेने से साफ़ इनकार कर दिया और कहा— *"इसका मूल्य केवल यह है कि आप अपने देश जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।"* उस युवक के इस छोटे से निश्छल कार्य ने पूरे जापान राष्ट्र के मस्तक को गौरव से ऊँचा कर दिया।

दूसरी घटना (कलंक लगाना): इसके विपरीत, एक अन्य देश का छात्र जापान में उच्च शिक्षा लेने आया। उसने वहाँ के सरकारी पुस्तकालय की एक मूल्यवान पुस्तक से कुछ अत्यंत दुर्लभ चित्र चुराकर पन्ने फाड़ लिए। पकड़े जाने पर पुलिस ने उसे देश से तो निकाला ही, साथ ही पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर लिख दिया कि उस देश का कोई भी नागरिक इस पुस्तकालय में प्रवेश नहीं कर सकता। इस प्रकार, एक व्यक्ति की नीच चोरी ने उसके संपूर्ण राष्ट्र को वर्षों के लिए कलंकित और लांछित कर दिया। निष्कर्ष यह है कि हर नागरिक का आचरण सीधे देश के सम्मान को प्रभावित करता है।

खंड 3: कमालपाशा और नेहरू जी का प्रसंग (महत्व भावना का है, कार्य की विशालता का नहीं)

कठिन शब्दार्थ

- **वर्षगाँठ:** जन्मदिवस या जयंती का उत्सव
- **हँडिया:** मिट्टी का एक छोटा गोल बर्तन
- **निहाल:** परम प्रसन्न, हर प्रकार से तृप्त
- **भाव-मुग्ध:** भावनाओं में डूबा हुआ, सम्मोहित
- **दस्तखती:** हस्ताक्षर (Signature) किया हुआ

सरल व्याख्या

लेखक इस शाश्वत सिद्धांत को प्रतिपादित करते हैं कि किसी भी कार्य की महत्ता उसकी भौतिक विशालता या कीमत में नहीं होती, बल्कि उस कार्य को करने के पीछे छिपी हुई पवित्र 'भावना' में होती है। अच्छी भावना से किया गया छोटे से छोटा कार्य भी महान बन जाता है। इसे समझाने के लिए वे दो मर्मस्पर्शी उदाहरण देते हैं:

तुर्की का प्रसंग: तुर्की के महान राष्ट्रपति मुस्तफ़ा कमालपाशा के जन्मदिवस का भव्य शाही उत्सव समाप्त हो चुका था। तभी तीस मील दूर से पैदल चलकर आया एक गरीब बूढ़ा किसान मिट्टी की एक छोटी हँडिया में पाव-भर जंगलों का शुद्ध शहद लेकर आया। कमालपाशा विश्राम के वस्त्र बदल चुके थे, परंतु उस बूढ़े की भावना का आदर करने के लिए वे साधारण कपड़ों में ही नीचे आए, स्वयं हँडिया खोलकर उँगली से शहद चाटा और अपने हाथ से उस बूढ़े

किसान को भी चखाया। उसे सर्वश्रेष्ठ उपहार घोषित कर अपनी शाही कार से पूरे सम्मान के साथ उसके गाँव छुड़वाया। वह शहद कीमती नहीं था, परंतु उसके पीछे का शुद्ध प्यार अमूल्य था।

भारत का प्रसंग: इसी प्रकार भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की कोठी पर एक साधारण भारतीय किसान अपने कंधे पर रंगीन सुतलियों से बुनी हुई एक साधारण खाट (चारपाई) रखकर दिल्ली लाया और उन्हें भेंट की। वह किसान नेहरू जी को देखकर इतना भाव-मुग्ध हो गया कि कुछ बोल न सका। पंडित नेहरू ने उस मामूली खाट को सस्नेह स्वीकार किया और बदले में उसे अपना एक कीमती हस्ताक्षर युक्त (दस्तखती) फोटो उपहार में दिया, जिसके लिए बड़े-बड़े धनी लोग तरसते थे। यह वास्तव में उस खाट की कीमत का नहीं, बल्कि उस गरीब देशवासी की अगाध राष्ट्रीय भावना का सम्मान था।

खंड 4: शक्तिबोध और सौंदर्यबोध की कसौटी (शल्य का प्रसंग और चुनाव का महत्व)

कठिन शब्दार्थ

- **कुरुचि:** बुरी रुचि, अशिष्टता या गंदा आचरण
- **ह्रास:** कमी आना, गिरावट या पतन
- **तरेड़:** दरार, चटक या मानसिक संदेह
- **सुरुचि:** अच्छी रुचि, शिष्ट आचरण या सुंदरता
- **ठेलमठेल:** धक्का-मुक्की, अव्यवस्था
- **उत्तेजक:** जोश पैदा करने वाले, भड़काने वाले नारे

सरल व्याख्या

लेखक प्रश्न उठाते हैं कि एक आम नागरिक कैसे जाँचे कि उसका दैनिक कार्य देश के हित में है या नहीं? इसके लिए वे दो मुख्य कसौटियाँ बताते हैं—**शक्ति-बोध** और **सौंदर्य-बोध**।

1. शक्ति-बोध (Shaktibodh): यदि हम बसों, ट्रेनों, चौपालों या क्लबों में बैठकर लगातार अपने ही देश की बुराई करते हैं, व्यवस्था को कोसते हैं और दूसरे देशों को श्रेष्ठ बताकर अपने राष्ट्र को हीन सिद्ध करते हैं, तो हम देश के शक्ति-बोध को गहरी चोट पहुँचा रहे हैं। लेखक महाभारत के 'शल्य' का उदाहरण देते हैं। शल्य महाबली कर्ण का सारथी था, परंतु वह जब भी कर्ण के रथ पर बैठता, कर्ण का उत्साह बढ़ाने के बजाय अर्जुन की अजेयता का उल्लेख कर देता था। बार-बार के इस मानसिक आघात ने कर्ण के अदम्य आत्मविश्वास में संदेह की 'तरेड़' (दरार) डाल दी, जो उसकी पराजय का कारण बनी। राष्ट्रीय स्तर पर नकारात्मक बातें करना शल्य जैसा ही आत्मघाती आचरण है।

2. सौंदर्य-बोध (Saundaryabodh): यदि हम सड़क पर केले का छिलका फेंकते हैं, थूकते हैं, घर का कूड़ा बाहर डालते हैं, अपशब्द बोलते हैं, दफ़्तर गंदा रखते हैं, या मेलों-रेलों में धक्का-मुक्की (ठेलमठेल) करते हैं, तो हम देश के सौंदर्य-बोध और संस्कृति को गहरी चोट पहुँचा रहे हैं।

चुनाव की अंतिम कसौटी: अंत में लेखक कहते हैं कि किसी देश की उच्चता और हीनता को मापने का थर्मामीटर वहाँ की 'चुनाव प्रक्रिया' है। जिस देश के नागरिक उत्तेजक नारों या गलत प्रभाव में आए बिना, अपने मत (वोट) का सही प्रयोग करके योग्य मनुष्य को चुनते हैं, वह देश उच्च है। मत देना नागरिक का परम कर्तव्य है और अयोग्य व्यक्ति को कुर्सी पर न बैठने देना उसका सर्वोच्च अधिकार है।

खंड 5: साथ-साथ पढ़ें: निर्मल जीत सिंह सेखों की शौर्य गाथा (पूरक पाठ)

कठिन शब्दार्थ

- **अनुरक्ति:** गहरा प्रेम, लगाव या आसक्ति
- **सिद्धहस्त:** किसी कार्य में पूरी तरह निपुण या कुशल होना
- **मुस्तैदी:** पूरी सजगता, तत्परता या कड़ाई के साथ ड्यूटी पर होना
- **प्रवीण:** कुशल, पारंगत या एक्सपर्ट
- **प्रशस्ति पत्र:** वीरता या सराहनीय कार्य के लिए दिया जाने वाला प्रशंसा पत्र

सरल व्याख्या

'साथ-साथ पढ़ें' खंड के अंतर्गत भारतीय वायुसेना के परमवीर फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों की अद्भुत वीरता का ऐतिहासिक वृत्तांत प्रस्तुत किया गया है। इनका जन्म १९४५ में पंजाब के लुधियाना के पास हुआ था। अपने पिता और महान सिख योद्धाओं की कहानियों से प्रेरित होकर वे भारतीय वायुसेना में लड़ाकू विमान चालक बने। अत्यधिक लंबे कद के होने के बावजूद वे छोटे लड़ाकू विमान 'नैट' (Gnat) को उड़ाने में पूरी तरह सिद्धहस्त हो गए थे।

१९७१ का भारत-पाक युद्ध प्रसंग: १४ दिसंबर १९७१ को पाकिस्तानी वायुसेना के ६ घातक सेबर जेट विमानों ने श्रीनगर हवाई पट्टी पर अचानक ताबड़तोड़ बमबारी शुरू कर दी। उस समय रनवे पर जानलेवा धुआँ और बम गिर रहे थे, परंतु अपनी जान की परवाह किए बिना फ्लाइंग ऑफिसर सेखों अपने नैट विमान को लेकर आसमान में उड़ पड़े। आसमान में एक के मुकाबले छह (१:६) की विषम और असमान लड़ाई शुरू हुई। उन्होंने अपने अदम्य रण-कौशल से दुश्मनों को आसमान में ही घेर लिया और दो सेबर विमानों को मार गिराया व क्षतिग्रस्त कर दिया। उन्होंने कंट्रोल रूम को संदेश दिया—*"मैं दो सेबर के पीछे लगा हूँ, इन्हें भागने नहीं दूँगा।"* अंत में, अत्यधिक घिर जाने के कारण पेड़ जितनी कम ऊँचाई पर लड़ते हुए उनका विमान क्रैश हो गया और मात्र २६ वर्ष की आयु में वे वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी इस शहादत के कारण पाकिस्तानी सेना कश्मीर घाटी पर कब्ज़ा करने में पूरी तरह असफल रही। वे भारतीय वायुसेना के इतिहास में सर्वोच्च 'परम वीर चक्र' से सम्मानित होने वाले एकमात्र योद्धा हैं।